क्रं.नं. १८.

वेद
पदे आष्टक १ ते ४
(त्र्यंबक

॥ कै. त्र्यंबक रा[illegible]
शं. र. वार्तिकर

2030.

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(१)

॥ पंचप्रश्नमाष्टकप्रारंभः ॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

प०प्र० ॥ ॥श्रीगणेशाय नमः॥ ॥हरिः ओम्॥ अग्निं। ईळे। पुरःऽहितं। यज्ञस्य। अ०१
॥१॥ देवं। ऋत्विजं। होतारं। रत्नऽधातमं। अग्निः। पूर्वेभिः। ऋषिऽभिः। ईड्यः। नूत
नैः। उत। सः। देवान्। आ। इह। वक्षति। अग्निना। रयिं। अश्नवत्। पोषं।
एव। दिवेऽदिवे। यशसं। वीरवत्ऽतमं। अग्ने। यं। यज्ञं। अध्वरं। विश्वतः। प
रिऽभूः। असि। सः। इत्। देवेषु। गच्छति। अग्निः। होता। कविऽक्रतुः। सत्यः।
चित्रश्रवःऽतमः। देवः। देवेभिः। आ। गमत्॥ १॥ यत्। अंग। दाशुषे। त्वं।
अग्ने। भद्रं। करिष्यसि। तव। इत्। तत्। सत्यं। अंगिरः। उप। त्वा। अग्ने। दिवे
ऽदिवे। दोषाऽवस्तः। धिया। वयं। नमः। भरंतः। आ। इमसि। राजंतं। अध्वरा ॥१॥

(2A)

णाम्। गोपाम्। ऋतस्य। दीदिविं। वर्द्धमानं। स्वे। दमे। सः। नः। पिताऽइव।
सूनवे। अग्ने। सुऽउपायनः। भव। सचस्व। नः। स्वस्तये॥ २॥ वायो इति। आ।
याहि। दर्शत। इमे। सोमाः। अरंऽकृताः। तेषाम्। पाहि। श्रुधि। हव
म्। वायो इति। उक्थेभिः। जरंते। त्वाम्। अच्छ। जरितारः। सुतऽसोमाः।
अहःऽविदः। वायो इति। तव। प्रऽपृंचती। धेना। जिगाति। दाशुषे।
उरूची। सोमऽपीतये। इंद्रवायू इति। इमे। सुताः। उप। प्रयःऽभिः।
आ। गतम्। इंदवः। वां। उशंति। हि। वायो इति। इंद्रः। च। चेतथः। सुता

(3)

प० प्र० नां। वाजिनीवसूइतिवाजिनीऽवसू। नौ। आ। यातं। उप। द्रवत्॥ ३॥ अ०१

॥२॥ वायोइति। इंद्रः। च। सुन्वतः। आ। यातं। उप। निःऽकृतं। मक्षु। इत्था।

धिया। नरा। मित्रं। हुवे। पूतऽदक्षं। वरुणं। च। रिशादसं। धियम्। घृताची

म्। साधंता। ऋतेन। मित्रावरुणौ। ऋतऽवृधौ। ऋतऽस्पृशा। क्रतुम्।

बृहंतम्। आशाथेइति। कवीइति। नः। मित्रावरुणा। तुविऽजातौ। उ

रुऽक्षया। दक्षं। दधातेइति। अपसम्॥ ४॥ अश्विना। यज्वरीः। इषः।

द्रवत्पाणीइतिद्रवत्ऽपाणी। शुभः। पतीइति। पुरुऽभुजा। चनस्य ॥१॥

(3A)

तम्। अश्विना। पुरुऽदंससा। नरा। शवीरया। धिया। धिष्ण्या। वनतं।
गिरः। दस्रा। युवाकवः। सुताः। नासत्या। वृक्तऽबर्हिषः। आ। यातम्।
रुद्रवर्त्तनीइतिरुद्रऽवर्त्तनी॥ इंद्र। आ। याहि। चित्रभानोइतिचित्रऽभा
नो। सुताः। इमे। त्वाऽयवः। अण्वीभिः। तना। पूतासः। ०। धिया। इषि
तः। विप्रऽजूतः। सुतऽवतः। उप। ब्रह्माणि। वाघतः। ०। तूतुजानः। उ
प। ब्रह्माणि। हरिऽवः। सुते। दधिष्व। नः। चनः॥ ५॥ ओमासः। चर्षणि
ऽधृतः। विश्वेदेवासः। आ। गत। दाश्वांसः। दाशुषः। सुतं। विश्वेदेवा

(५)

प०प्र० ॥३॥

सः। अप्ऽतुरः। सुतम्। आ। गंत। तूर्णयः। उस्राः२इव। स्वसराणि। विश्वे। अ०१
देवासः। अस्रिधः। एहिऽमायासः। अद्रुहः। मेधं। जुषन्त। वह्नयः। पा
वका। नः। सरस्वती। वाजेभिः। वाजिनीऽवती। यज्ञं। वष्टु। धियाऽव
सुः। चोदयित्री। सूनृतानां। चेतंती। सुऽमतीनां। यज्ञम्। दधे। सरस्व
ती। महः। अर्णः। सरस्वती। प्र। चेतयति। केतुना। धियः। विश्वाः। वि।
राजति॥ ६॥ सुरूपऽकृत्नुम्। ऊतये। सुदुघांऽइव। गोऽदुहे। जुहूम
सि। द्यविऽद्यवि। उप। नः। सवना। आ। गहि। सोमस्य। सोमऽपाः। पिब। ॥३॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गोऽदाः। इत्। रेवतः। मदः। अथ। ते। अंतमानां। विद्याम। सुऽमतीनां। मा।
नः। अति। ख्यः। आ। गहि। परा। इहि। विग्रं। अस्तृतम्। इंद्रं। पृच्छ। विपःऽ
चितम्। यः। ते। सखिऽभ्यः। आ। वरम्। उत। ब्रुवंतु। नः। निदः। निः। अन्य
तः। चित्। आरत। दधानाः। इंद्रे। इत्। दुवः। ५ ॥ उत। नः। सुऽभगान्। अ
रिः। वोचेयुः। दस्म। कृष्टयः। स्याम। इत्। इंद्रस्य। शर्मणि। आ। ईं। आशुं।
आशवे। भर। यज्ञऽश्रियम्। नृऽमादनं। पतयत्। मंदयत्ऽसखं। अस्य।
पीत्वा। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। घनः। वृत्राणाम्। अभवः। प्र। आवः।

(5)

प०प्र० ॥४॥ वाजेषु। वाजिनम्। तं। त्वा। वाजेषु। वाजिनम्। वाजयामः। शतक्रतो इ अ०१
तिशतऽक्रतो। धनानाम्। इंद्र। सातये। यः। रायः। अवनिः। महान्।
सुऽपारः। सुन्वतः। सखा। तस्मै। इंद्राय। गायत॥०॥ आ। तु। आ। इत।
नि। सीदत। इंद्रं। अभि। प्र। गायत। सखायः। स्तोमऽवाहसः। पुरुऽतमं।
पुरूणां। ईशानं। वार्याणाम्। इंद्रं। सोमे। सचा। सुते। सः। घ। नः। योगे। आ।
भुवत्। सः। राये। सः। पुरम्ऽध्याम्। गमत्। वाजेभिः। आ। सः। नः। यस्य।
संऽस्थे। न। वृण्वते। हरी इति। समत्ऽसु। शत्रवः।०। सुतऽपाव्ने। सुताः। ॥४॥

(5A)

इमे। शुचयः। यंति। वीतये। सोमासः। दधिऽआशिरः॥ ५॥ त्वं। सुत
स्य। पीतये। सद्यः। वृद्धः। अजायथाः। इंद्र। ज्यैष्ठ्याय। सुक्रतो इति सुऽक्र
तो॥ आ। त्वा। विशंतु। आशवः। सोमासः। इंद्र। गिर्वणः। शं। ते। संतु।
प्रऽचेतसे। त्वां। स्तोमाः। अवीवृधन्। त्वां। उक्था। शतक्रतो इति शतऽ
क्रतो। त्वां। वर्द्धंतु। नः। गिरः। अक्षितऽऊतिः। सनेत्। इमं। वाजं। इंद्रः। सह
स्रिणं। यस्मिन्। विश्वानि। पौंस्या। मा। नः। मर्त्ताः। अभि। द्रुहन्। तनूनां। इं
द्र। गिर्वणः। ईशानः। यवय। वधम्॥ १०॥ युंजंति। ब्रध्नं। अरुषं। चरंतं। प

(6)

प०म० रि। तस्थुषः। रोचंते। रोचना। दिवि। युंजंति। अस्य। काम्या। हरी इति। अ०१
॥५॥ विऽ[illegible]क्षसा। रथे। शोणा। धृष्णू इति। नृऽवाहसा। केतुं। कृण्वन्। अ
केतवे। पेशः। मर्याः। अपेशसे। सं। उषत्ऽभिः। अजायथाः। आत्।
अह। स्वधां। अनु। पुनः। गर्भऽत्वं। आऽईरिरे। दधानाः। नाम। यज्ञि
यं। वीळु। चित्। आरुजत्नुऽभिः। गुहा। चित्। इंद्र। वह्निऽभिः। अविं
दः। उस्रियाः। अनु॥११॥ देवऽयंतः। यथा। मतिं। अछ। विदत्ऽवसुं। गि
रः। महां। अनूषत। श्रुतं। इंद्रेण। सं। हि। दृक्षसे। संऽजग्मानः। अबि ॥५॥

(6A)

भ्युषा। मंदू इति। समानऽवर्चसा। अनवद्यैः। अभिद्युऽभिः। मखः। स
हस्वत्। अर्चति। गणैः। इंद्रस्य। काम्यैः। अतः। परिऽज्मन्। आ। गहि।
दिवः। वा। रोचनात्। अधि। सं। अस्मिन्। ऋंजते। गिरः। इतः। वा। सातिं।
ईमहे। दिवः। वा। पार्थिवात्। अधि। इंद्रं। महः। वा। रजसः॥ १२॥ इंद्रं।
इत्। गाथिनः। बृहत्। इंद्रं। अर्केभिः। अर्किणः। इंद्रं। वाणीः। अनूषत।
इंद्रः। इत्। हर्योः। सचा। संऽमिश्लः। आ। वचःऽयुजा। इंद्रः। वज्री। हि
रण्ययः। इंद्रः। दीर्घाय। चक्षसे। आ। सूर्यम्। रोहयत्। दिवि। वि। गोभिः।

(7)

प०प्र० अद्रिं। एरयत्। इंद्र। वाजेषु। नः। अव। सहस्रऽप्रधनेषु। च। उग्रः। अ०१
॥६॥ उग्राभिः। ऊतिऽभिः। इंद्रं। वयं। महाऽधने। इंद्रं। अर्भे। हवामहे। युजं।
वृत्रेषु। वज्रिणं॥१३॥ सः। नः। वृषन्। अमुं। चरुं। सत्राऽदावन्। अप।
वृधि। अस्मभ्यं। अप्रतिऽस्कुतः। तुंजेऽतुंजे। ये। उत्ऽतरे। स्तोमाः।
इंद्रस्य। वज्रिणः। न। विंधे। अस्य। सुऽस्तुतिं। वृषा। यूथाऽइव। वं
सगः। कृष्टीः। इयर्ति। ओजसा। ईशानः। अप्रतिऽस्कुतः। यः। एकः।
चर्षणीनां। वसूनां। इरज्यति। इंद्रः। पंच। क्षितीनां। इंद्रं। वः। विश्वतः। ॥६॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(7A)

परि। हवामहे। जनेभ्यः। अस्माकं। अस्तु। केवलः॥ १४ ॥ आ। इंद्र।
सानसिं। रयिम्। सऽजित्वानं। सदाऽसहम्। वर्षिष्ठम्। ऊतये। भर। नि।
येन। मुष्टिऽहत्यया। नि। वृत्रा। रुणधामहे। त्वाऽऊतासः। नि। अर्वता।
इंद्र। त्वाऽऊतासः। आ। वयम्। वज्रं। घना। ददीमहि। जयेम। सं। युधि।
स्पृधः। वयम्। शूरेभिः। अस्तृऽभिः। इंद्र। त्वया। युजा। वयं। ससह्याम। पृ
तन्यतः। महान्। इंद्रः। परः। च। नु। महिऽत्वं। अस्तु। वज्रिणे। द्यौः। न। प्र
थिना। शवः॥ १५ ॥ समऽओहे। वा। ये। आशत। नरः। तोकस्य। सनितौ।

(8)

१०प्र० ॥७॥ विप्रासः। वा। धियाऽयवः। यः। कुक्षिः। सोमऽपातमः। समुद्रःऽइव। पि अ०१
न्वते। उर्वीः। आपः। न। काकुदः। एव। हि। अस्य। सूनृता। विऽरप्शी। गोऽ
मती। मही। पक्का। शाखा। न। दाशुषे। एव। हि। ते। विऽभूतयः। ऊतयः। इंद्र।
माऽवते। सद्यः। चित्। संति। दाशुषे। काम्या। स्तोमः। उक्थं। च। शंस्या।
इंद्राय। सोमऽपीतये॥ १६॥ इंद्र। आ। इहि। मत्सि। अंधसः। विश्वेभिः। सो
मपर्वऽभिः। महान्। अभिष्टिः। ओजसा। आ। ईं। एनं। सृजत। सुते। मं
दिं। इंद्राय। मंदिने। चक्रिं। विश्वानि। चक्रये। मत्स्व। सुऽशिप्र। मंदिऽ ॥७॥

(8A)

भिः। स्तोमेभिः। विश्वऽचर्षणे। सचा। एषु। सवनेषु। आ। असृग्रं। इंद्र।
ते। गिरः। प्रति। त्वां। उत्। अहासत। अजोषाः। वृषभं। पतिं। सं। चोदय।
चित्रं। अर्वाक्। राधः। इंद्र। वरेण्यम्। असत्। इत्। ते। विऽभु। प्रऽभु॥ ५॥
अस्मान्। सु। तत्र। चोदय। इंद्र। राये। रभस्वतः। तुविऽद्युम्न। यशस्वतः।
सं। गोऽमत्। इंद्र। वाजऽवत्। अस्मे इति। पृथु। श्रवः। बृहत्। विश्वऽआ
युः। धेहि। अक्षितं। अस्मे इति। धेहि। श्रवः। बृहत्। द्युम्नं। सहस्रऽसात
मं। इंद्र। ताः। रथिनीः। इषः। वसोः। इंद्रं। वसुऽपतिं। गीःऽभिः। गृणंतः। ऋ

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(१)

१०प्र० ग्मियं।होम।गंतारं।ऊतये।सुतेऽसुते।निऽओकसे।बृहत्।बृहते। अ०१

॥८॥ आ।इत्।अरिः।इंद्राय।शूषं।अर्चति॥१०॥गायंति।त्वा।गायत्रि

णः।अर्चंति।अर्कं।अर्किणः।ब्रह्माणः।त्वा।शतक्रतो इति शतऽ

क्रतो।उत्।वंशम्ऽइव।येमिरे।यत्।सानोः।सानुं।आ।अरुहत्।भूरि।

अस्पष्ट।कर्त्वम्।तत्।इंद्रः।अर्थम्।चेतति।यूथेन।वृष्णिः।एजति।यु

क्ष्व।हि।केशिना।हरी इति।वृषणा।कक्ष्यऽप्रा।अथ।नः।इंद्र।सोमऽ

पाः।गिराम्।उपऽश्रुतिम्।चर।आ।इहि।स्तोमान्।अभि।स्वर।अभि। ॥८॥

(9A)

गृणीहि। आ। रुव। ब्रह्म। च। नः। वसो इति। सचा। इंद्र। यज्ञम्। च। वर्द्ध
य। उक्थं। इंद्राय। शंस्यं। वर्द्धनम्। पुरुनिःऽसिध्वे। शक्रः। यथा। सुतेषु।
नः। ररणत्। सख्येषु। च। तम्। इत्। सखिऽत्वे। ईमहे। तं। राये। तं। सुऽवीर्ये।
सः। शक्रः। उत। नः। शकत्। इंद्रः। वसु। दयमानः॥ १२॥ सुऽविवृतम्।
सुनिःऽअजं। इंद्र। त्वाऽदातं। इत्। यशः। गवाम्। अप। व्रजम्। वृधि।
कृणुष्व। राधः। अद्रिऽवः। नहि। त्वा। रोदसी इति। उभे इति। ऋघायमा
णं। इन्वतः। जेषः। स्वःऽवतीः। अपः। सं। गाः। अस्मभ्यं। धूनुहि। आऽश्रु

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(10)

१०प्र० तऽकर्ण।श्रुधि।हवम्।नु।चित्।दधिष्व।मे।गिरः।इंद्र।स्तोमं।इमं।म अ०१
॥२॥ मं।कृष्व।युजः।चित्।अंतरम्।विद्म।हि।त्वा।वृषन्ऽतमं।वाजेषु।हव
नऽश्रुतम्।वृषन्ऽतमस्य।हूमहे।ऊतिं।सहस्रऽसाऽतमां।आ।तु।नः।
इंद्र।कौशिक।मंदसानः।सुतं।पिब।नव्यं।आयुः।प्र।सु।तिर।कृधि।
सहस्रऽसां।ऋषिं।परि।त्वा।गिर्वणः।गिरः।इमाः।भवंतु।विश्वतः।वृद्धऽ
आयुम्।अनु।वृद्धयः।जुष्टाः।भवंतु।जुष्टयः॥२०॥इंद्रं।विश्वाः।अवी
वृधन्।समुद्रऽव्यचसम्।गिरः।रथिऽतमं।रथिनाम्।वाजानां।सत्ऽप ॥२॥

the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(10A)

तेऽआहवन। दीदिऽवः। प्रति। स्म। रिषतः। दह। अग्ने। त्वम्। रक्षस्विनः।
अग्निना। अग्निः। सं। इध्यते। कविः। गृहऽपतिः। युवा। हव्यऽवाट्। जु
हुऽआस्यः॥२२॥ कविं। अग्निं। उप। स्तुहि। सत्यऽधर्माणं। अध्वरे। देवं।
अमीवऽचातनं। यः। त्वाम्। अग्ने। हविःऽपतिः। दूतं। देव। सपर्यति। तस्य।
स्म। प्रऽअविता। भव। यः। अग्निं। देवऽवीतये। हविष्मान्। आऽविवास
ति। तस्मै। पावक। मृळय। सः। नः। पावक। दीदिऽवः। अग्ने। देवान्। इह।
आ। वह। उप। यज्ञं। हविः। च। नः। सः। नः। स्तवानः। आ। भर। गायत्रेण।

(11)

१०प्र० नवीयसा। रयिं। वीर ऽवतीम्। इषं। अग्ने। शुक्रेण। शोचिषा। विश्वाभिः अ०१
॥११॥ देवहूति ऽभिः। इमं। स्तोमं। जुषस्व। नः॥ २३॥ सु ऽसमिद्धः। नः। आ। वह।
देवान्। अग्ने। हविष्मते। होतरिति। पावक। यक्षि। च। मधु ऽमंतं। तनू ऽ
नपात्। यज्ञम्। देवेषु। नः। कवे। अद्य। कृणुहि। वीतये। नराशंसं। इह।
प्रियम्। अस्मिन्। यज्ञे। उप। ह्वये। मधु ऽजिह्वं। हविः ऽकृतं। अग्ने। सुख ऽ
तमे। रथे। देवान्। ईळितः। आ। वह। असि। होता। मनुः ऽहितः। स्तृणीत।
बर्हिः। आनुषक्। घृत ऽपृष्ठं। मनीषिणः। यत्र। अमृतस्य। चक्षणं। वि। ॥११॥

Joint project of the Balawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com